अध्यक्षता नहीं करेंगे, और इलाहाबाद हाईकोर्ट के रिटायर्ड चीफ़ जस्टिस श्री एस० के० वर्मा, को अध्यक्षता करने के लिए कहा गया । जब वह 6 तारीख को वहां पहुंचे तो सीताराम जयपुरिया ने कानपुर से बुलाये गये गुंडों की सहायता से उन्हें एक बाथरूम में बन्द कर दिया, और ढाई घंटे तक वहां रखा । जो शेयरहोल्डर्ज शेयर्ज बेचना चाहते हैं, उन्होंने थाने में रपट की । लेकिन एस० पी० और कलेक्टर आदि ने कोई कार्यवाही नहीं की । एक रिटायर्ड चीफ़ जस्टिस को ढाई घंटे तक बन्द रखा गया, लेकिन सिर्फ़ सादी वर्दी में सिर्फ़ दो सिपाही वहां पहुंचे । श्री वर्मा किसी तरह से पीछे के दरवाजे से निकल कर भागे और उन्होंने भी रपट लिखाई, लेकिन कोई कार्यवाही नहीं हुई ।

यह बहुत संगीन घटना है कि जो आदमी हिन्दुस्तान के सब से बड़े प्रांत का मुख्य न्यायाधीश रहा हो, उसे ढाई घंटे तक बन्द रखा गया, लेकिन सीताराम जयपुरिया इतना ताकतवर हो गया है कि उस के खिलाफ़ कोई कार्यवाही नहीं की गई । लगता है कि वह आई० डी० बी० आई०, एल० आई० सी० और वित्त मंत्रालय से भी ज्यादा ताकतवर हो गया है ।

स्वदेशी काटन मिल में आठ हजार मजदूर काफ़ी समय से ग़रीबी और भुखमरी से पीड़ित हैं । दो वर्ष से उन्हें समय पर तन्ख्वाह नहीं मिल रही है । आई० डी० बी० आई० का अधिकारी वर्ग सीताराम जयपुरिया के साथ मिला हुआ है और चौदह लाख रुपये के शेयर्ज नहीं बिकने देता है । मैं वित्त मंत्रालय और इंडस्ट्रीज मंत्रालय से यह जानना चाहता हूं कि क्या कारण है कि एशिया की सब से बड़ी धागा बनाने वाली कानपुर की यह काटन मिल आज ख़तरे में हैं, वहां के आठ हजार मजदूरों के भविष्य का प्रश्न है, लेकिन सीताराम जयपुरिया और आई० डी० बी० आई० के चेयरमैन उस कारखाने को बर्बाद करने पर तुले हुए हैं ; क्यों नहीं इस बारे में उचित एक्शन लिया जा रहा है, क्यों नहीं शेयर्ज को बेचने की अनुमति दी जा रही है ।

उत्तर प्रदेश सरकार ने अक्तूबर, 1977 में लैंड रेवेन्यू के अन्तर्गत एक रिसीवर भी नियुक्त किया तथा कम्पनी के एक करोड़ रुपये की कीमत के स्वदेशी पोलिटेक्स के शेयर भी एटैच कर लिये, ताकि उन्हें बेच कर सरकार का ऋण तथा मजदूरों का वेतन चुकाया जा सके । परन्तु आई० डी० बी० आई० का सहयोग न मिलने के कारण उत्तर प्रदेश सरकार उन शेयरों को अभी तक नहीं बेच सकी है ।

इस लिए मैं कहना चाहता हूं कि इस बारे में पूरी जांच पड़ताल की जाये, सरकार इस मामले में इन्टरवीन करे और जो लोग सीताराम जयपुरिया के साथ मिले हुए हैं, उन्हें सख्त सजा दे, ताकि आठ हजार मजदूरों की जान बचे । सत्ता के सांडों से हमें कोई मतलब नहीं है । उस कारखाने का बचाव होना चाहिए और आई० डी० बी० आई० के जो अफ़सर सीताराम जयपुरिया से मिले हुए हैं और कांग्रेस सरकार के समय से गुलछर्रे उड़ा रहे हैं, उन के खिलाफ़ कार्यवाही की जाये । क्या जनता सरकार के आने के बाद भी वह व्यक्ति इतना ताकतवर है कि एल० आई० सी०, वित्त मंत्रालय और इंडस्ट्रीज मंत्रालय उसके विरुद्ध कुछ नहीं कर पा रहे हैं । मैं चाहता हूं कि सरकार इस बारे में विस्तृत बयान दे कि चीफ़ जस्टिस को गिरफ़्तार किये जाने के बारे में कार्यवाही क्यों नहीं की गई ।

### (iv) FIRE ACCIDENT IN SAMACHAR OFFICE, BOMBAY

SHRI P. RAJAGOPAL NAIDU (Chittoor): Sir, recently four persons died because of the fire accident in Samachar Office in Bombay. You know that there are so many accidents in railways ; there are so many stabbings in

[Shri P. Rajgopal Naidu]

Ambassadors' Offices and there is so much of sabotage in the country. Many people suspect that this is also a sabotage.

Government has not given the details with regard to the recent fire accidents. Government has also not said anything about the help given to the families of victims, whether compensation was given or not. It is creating a scare in the country. Unless Government takes stern measures to put down all this violence it will create confusion in the country. Therefore, I request the government to investigate into the matter and let the House know about the details.

(v) FAILURE TO GIVE CITIZENSHIP RIGHTS TO REFUGEES WHO CAME TO INDIA AFTER 1971 INDO-PAK WAR

**श्री भानु कुमार शास्त्री (उदयपुर) :** उपाध्यक्ष महोदय, मैं आज उस समस्या को लेना चाहता हूं जिस का समाधान आज से बहुत पहले हो जाना चाहिए था यह समस्या क्षेत्रीय नहीं है, किन्तु एक राष्ट्रीय समस्या है। 1971 में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के युद्ध के समय सिन्ध और गुजरात की सीमा पर रहने वाले जो लोग थे उन्होंने हमारी सेना को रास्ता बताया। मैं उन सब गांवों को देख कर आया हूं, उस समय जब हमारी सेना पाकिस्तान पर आक्रमण करने जा रही थी तो उन्हें रास्ते का पता नहीं था कि कौन से रास्ते से जा कर हम विजय प्राप्त कर सकते हैं। पाकिस्तान के अन्दर रहने वाले उन व्यक्तियों ने उसे रास्ते बताये जिस के कारण हमारी भारत की सेना पाकिस्तान को परास्त करने में सफल हो गई। परिणाम यह हुआ कि हमारा जो समझौता हुआ उस समझौते में जब हम उस क्षेत्र को खाली कर के यहां आए तो क्यों कि उन्होंने भारत की सेना को रास्ता बताया था इसलिए अगर वे पाकिस्तान में रह जाते तो दो बातें उन के साथ होतीं—या तो उनका जीवन पशु-तुल्य होता या वे मौत के घाट उतार दिए जाते, इसलिए वे हिन्दुस्तान में चले आए। उन की संख्या लगभग आधा लाख है। आज उनकी दशा अत्यंत दयनीय है। मुझे आश्चर्य होता है कि बंगला देश के शरणार्थियों के रहने के लिए देवरी कैम्प में और अन्य स्थानों में पक्के मकान थे, लेकिन उन के लिए एक तम्बू नहीं, एक टेन्ट नहीं और हमारे मंत्रालय ने गत वर्ष उनको आवास के लिए 2 सौ रुपये दिए। क्या दो सौ रुपये में कोई मकान बन सकता है? 200 रुपये में तो कोई घास का छप्पर भी नहीं बन पाता है। जैसे तैसे कर के उन्होंने जो झोपड़ी बनायी वह आग लगने के कारण जल कर खाक हो गई। अब आज उन के रहने के लिए कोई मकान नहीं है। खाने के लिए उन्हें तीस रुपये मिलते हैं और बालकों को 15 रुपये मिलते हैं। तीस रुपये में आज की महंगाई के जमाने में क्या कोई जीवन का निर्वाह कर सकता है। उन बच्चों को पूरा राशन मिले, वह भी नहीं होता। केवल 30 रुपये उनको मिलते हैं और आश्चर्य की बात यह है कि आज उन में से कोई शरणार्थियों के कैम्प में अध्यापक के पद पर लग गया तो गत 6 वर्ष में दी हुई सबसिडी उस से रिकवर हो रही है। वह कहां से देंगे? उन के पास खाने के लिए पैसा नहीं और उनसे रिकवरी के लिए आर्डर चले गए। हम ने कई पत्र लिखे मंत्रालय को कि कम से कम रिकवरी तो बन्द कर दी जाय। मुझे आपसे यह कहना है कि आखिर इनका क्या अपराध है, क्या दोष है? इन का अपराध तो यही था कि जो हमारी भारत की सेना वहां आक्रमण करने के लिए गई उसे उन्होंने रास्ता बताया और यही नहीं, भारत सरकार का जिस में कोई पैसा नहीं लगता, एक नागरिकता का अधिकार भी उन को वह नहीं दे सकती। पुरानी सरकार तो कह रही थी कि इन को वापस भेजेंगे। हमारी उन के साथ बातचीत चल रही है। कैसे ये वापस जाएंगे। जाएंगे तो मौत के घाट उतारे जाएंगे। अगर उन्हें नागरिकता का अधिकार होता तो उन में कई ऐडवोकेट्स हैं, कई पोस्ट ग्रेजुएट हैं, उन्हें नौकरी मिल सकती थी या वे कोई धन्धा कर सकते थे। आज वे पशु तुल्य जीवन तो नहीं बिताते। यह समस्या बहुत बड़ी है। मैं ने इसलिए